

114

मैं

मैंया- अपनी दया की- कर दे नजर
काहे डोले रे मनुआ- डगर डगर

मैं - ममतामई- आश लगी है ॥2॥

आश लगी है मैंया आश लगी
प्यासे मन की उठी- मैंया कैसी लहर
काहे डोले रे----

बन शक्ति मैं - जग रच डाला ॥2॥

जग रच डाला- लूने- जग रच डाला
बैठीं हर गाँव में- बैठीं शहर शहर
काहे डोले रे----

पापी मनुआँ- तनिक न माने ॥2॥

तनिक न माने- मनुआँ- तनिक न माने
नित रोज- नये- नये घोले जहर
काहे डोले रे---

पार तेरा मैं - किसने पाया ॥2॥

किसने पाया मैंया किसने पाया
भजे- तुमको "श्री बाबा श्री" मैंया आठों पेहर
काहे डोले रे----